6. गिलफर्ड का बुद्धि की संरचना : गिलफर्ड के अनुसार बुद्धि का एक 'संरचना प्रतिमान' (Structure of Intellect Mode) होता है। संरचना प्रतिमान के तीन प्रमुख आयाम हैं जिसके अन्तर्गत निम्न योग्यताएँ आती हैं -

(A) संचालन (Operation) (5)

(i) मूल्यांकन (Evaluation)

(ii) उपसारी चिन्तन (Convergent Thinking)

(iii) अपसारी चिन्तन (Divergent Thinking)

(iv) स्मृति (Memory)

(v) बोध (Cognition)

(B) विषयवस्तु (Contents) (4)

(i) आकारात्मक (Figural)

(ii) प्रतीकात्मक (Symbolic)

(iii) अर्थगत (Semantic)

(iv) व्यवहारात्मक (Behavioural)

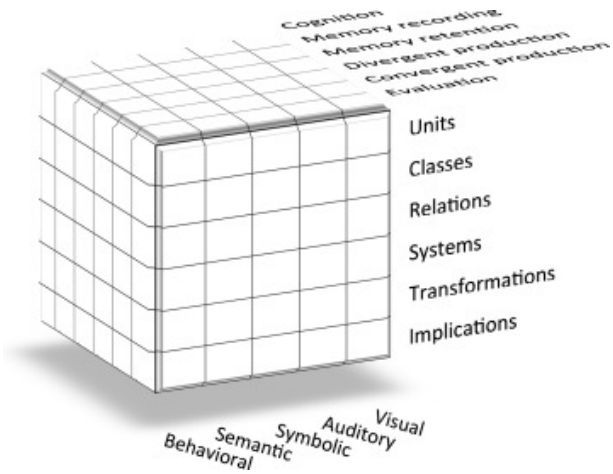

(C) उत्पादन (Products) (6)

(i) इकाइयाँ (Units)

(ii) श्रेणियाँ (Classes)

(iii) सम्बन्ध (Relations)

(iv) तन्त्र (Systems)

(v) रूपान्तरण (Transformation)

(vi) निहितार्थ (Implications)

उपर्युक्त समस्त योग्यताओं के गुणनफल से योग्यताएँ बनती हैं अर्थात् 5,64 4 योग्यताओं के गुणनफल, 5 x 6x4 = 120 से योग्यताओं के तत्व बनते हैं।

7. तरल ठोस बुद्धि सिद्धान्त (Fluid Crystallized Intelligence theory) : आर. बी. कैटल (R. B. Cattle) ने सन् 1963 में बुद्धि के एक सिद्धान्त को प्रस्तुत किया जिसके अनुसार तरल बुद्धि का निर्धारण वंशानुगत कारकों (GeneticFactors) द्वारा होता है। वस्तुतः तरल बुद्धि स्पियरमैन के जी. कारक (G-Factor) के समान होती है तथा इसमें मुख्यतः तर्क शक्ति निहित होती है। इसके विपरीत ठोस बुद्धि का निर्धारण पर्यावरणीय कारकों (Environmental Factors) द्वारा होता है। वस्तुतः ठोस बुद्धि में उन क्षमताओं को रखा जाता है जिन्हें व्यक्ति अपनी तरल बुद्धि का उपयोग करके अर्जित करता है। अतः तरल बुद्धि तथा वातावरणीय उद्बोधन के द्वारा ठोस बुद्धि की सीमा का निर्धारण होता है। ठोस बुद्धि का विकास वयस्कावस्था (Adulthood) में होता रहता है।

8. संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त (Theory of Cognitive Development) : मानसिक विकास नामक अध्याय में जीन पियाजे द्वारा सन् 1970 में प्रस्तुत संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार बुद्धिमतापूर्ण व्यवहार करने वाला व्यक्ति ही बुद्धिमान होता है। अर्थात् व्यक्ति जितना बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार करता है वह उतना ही अधिक बुद्धिमान होता है। पियाजे के अनुसार जो व्यवहार अनुकूलतम सफलता प्रदान करता है वही बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार कहा जा सकता है। वस्तुतः जीन पियाजे ने बुद्धि को एक ऐसी अनुकूलित प्रक्रिया (Adaptive Process) के रूप में स्वीकार किया जिसमें जैविक परिपक्वता (Biological Maturation) की वातावरणीय परिस्थितियों (Environmental Conditions) के साथ अन्तर्क्रिया होती है। उसके अनुसार जैसे-जैसे बालक-बालिकाओं का संज्ञानात्मक विकास होता जाता है वैसे-वैसे उनकी बौद्धिक क्षमता भी बढ़ती जाती है। अर्थात् बालक-बालिकाओं का बौद्धिक विकास उनके द्वारा अपनाई गई संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है। पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को विकास की चार अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है। ये चार अवस्थाएँ –

(i) संवेदनात्मक - गामक अवस्था

(ii) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre operational Stage)

(iii) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (concrete-operations)

(iv) औपचारिक सक्रिया अवस्था (Formal-operation Stage)

पियाजे ने वस्तुतः बुद्धि को भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में होने वाली संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में ने परिवर्तनों के रूप में परिभाषित किया है।